









ਨਈ ਸਹਮਤਿ ਜਧਾ ਅਹਮ

मानव सरोवर की यात्रा फिर शुरू करने और द्विपक्षीय व्यापार सुगम बनाने संबंधी सहमतियां डोवाल- वांग वार्ता का व्यावहारिक नतीजा हैं। दूरगामी नजरिए से सीमा विवाद के हल पर 2005 में तय हुई राजनीतिक कसौटियों पर नई सहमति ज्यादा अहम है। भारत और चीन के विशेष प्रतिनिधियों के बीच सीमा विवाद के निपटारे पर बीजिंग में हुई वार्ता का सार यह है कि चार साल तक तनावपूर्ण रहने के बाद दोनों का रिश्ता अब पटरी पर लौट रहा है। भारतीय प्रतिनिधि अजित डोवाल और चीनी प्रतिनिधि वांग यी की वार्ता में, चीनी विदेश मंत्रालय की विज्ञप्ति के मुताबिक, छह सूत्री सहमति बनी। भारतीय विज्ञप्ति में उन छह सूत्रों का स्पष्ट उल्लेख तो नहीं है, लेकिन कहा गया है कि दोनों विशेष प्रतिनिधियों ने आपसी रिश्ते को सकारात्मक दिशा प्रदान की है। तिब्बत के रास्ते से मानव सरोवर की यात्रा फिर शुरू करने और द्विपक्षीय व्यापार को सुगम बनाने संबंधी सहमतियां इस वार्ता का व्यावहारिक नतीजा हैं। मगर दूरगामी लिहाज से सीमा विवाद हल करने के लिए 2005 में दोनों देशों के बीच तय हुई राजनीतिक कसौटियों पर नई सहमति ज्यादा अहम है। 1988 से 2005 तक भारत- चीन संबंध सकारात्मक दिशा में थे। उसी क्रम में 2005 में बनी सहमति को एक बड़ी कामयाबी माना गया था। डोवाल- वांग वार्ता में इस पर भी जोर दिया गया कि सीमा विवाद का हल पैकेज के रूप में होगा। यानी पूरब में अरुणाचल और पश्चिम में लदाख सीमाओं पर जो मतभेद हैं, उन पर एकमुश्त सहमति बनाई जाएगी। हर समाधान का आधार लेन-देन की भावना होती है। दोनों देश अगर इस भावना पर रजामंद हो रहे हों, तो आशा की जा सकती है कि इस लंबे विवाद का हल निकल आएगा। बहरहाल, इस रास्ते में अनेक दिक्कतें हैं। दोनों देशों की अंदरूनी राजनीतिक प्रक्रिया और अंतरराष्ट्रीय पहलुओं का साथा भारत-चीन संबंधों पर पड़ता रहा है। इसके अलावा यह देखना होगा कि क्या सचमुच अब नए सिरे से उभर रही सहमतियों पर चीन कायम रहता है। भारत में अक्सर यह संदेह रहता है कि ऐसी सहमतियों का इस्तेमाल चीन सीमा के करीब अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए करता है। वैसे चीन से बेहतर रिश्ता दोनों देशों की आर्थिक ज़रूरत है, जैसाकि इस वर्ष संसद में पेश हुए आर्थिक सर्वेक्षण में कहा गया था। इसलिए फिलहाल चीजें पटरी पर लौट रही हैं, तो उसे एक सकारात्मक घटनाक्रम कहा जाएगा।

स्वस्थ मध्यप्रदेश-सशक्ति  
मध्यप्रदेश को मूर्त रूप देने  
उठाये गए सशक्ति कदम

मध्यप्रदेश सरकार प्रधानमंत्री श्री नरन्द्र मादा के दूरदर्शी नेतृत्व और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के मार्गदर्शन में प्रदेश की स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार और उनकी गुणवत्ता में सुधार के लिए निरंतर प्रयासरत है। स्वस्थ मध्यप्रदेश की संकल्पना को साकार करने के लिए सरकार ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इससे प्रदेश के हर नागरिक को सुलभ, निःशुल्क और उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हो रही हैं। प्रदेश सरकार का संकल्प है कि हर नागरिक को उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं मिलें और प्रदेश एक आदर्श स्वास्थ्य मॉडल के रूप में स्थापित हो। आत्मनिर्भार और समृद्ध मध्यप्रदेश के निर्माण के लिये प्रदेश सरकार निरंतर अपने प्रयासों को आगे बढ़ा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग और चिकित्सा शिक्षा विभाग का एकीकरण किया गया है। इस कदम से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों और मेडिकल कॉलेजों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित हुआ है। साथ ही मरीजों को समय पर और बेहतर इलाज मिलना सुनिश्चित हुआ है। 46 हजार 491 नए पदों का सृजन: स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर करने के लिए मानव संसाधनों में भी उल्लेखनीय वृद्धि की गई है। मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य है, जिसने 'पब्लिक हैल्थ कैडर' की शुरुआत की है। इसमें 46,491 नए पदों का सृजन किया गया है, जिन्हें अगले दो वर्षों में भरा जाएगा। इस पहल से प्रदेश के अस्पतालों और स्वास्थ्य केंद्रों में कर्मचारियों की कमी दूर होगी और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार आएगा। प्रदेश में निःशुल्क दवाएं और जांच सेवाएं भी व्यापक स्तर पर उपलब्ध कराई जा रही हैं। जिला अस्पतालों में अब 530 प्रकार की दवाएं और 132 प्रकार की जांच सेवाएं उपलब्ध हैं। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में भी 80 प्रकार की जांच सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। इन प्रयासों से गरीब और जरूरतमंद मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिल रही हैं। प्रदेश में 11,789 हैल्थ एंड वेलनेस सेंटर्स स्क्रिय किए गए हैं, जहां नागरिकों को घर के पास उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाएं मिल रही हैं। इन सेन्टर्स से अब तक 3.62 करोड़ से अधिक दवाइयाँ वितरित की जा चुकी हैं और 2.91 करोड़ से अधिक जांचें की जा चुकी हैं। इसके अलावा, टेलीमेडिसिन सेवाओं के अंतर्गत 20.47 लाख से अधिक कॉल्स के जरिए ग्रामीण इलाकों के मरीजों को विशेषज्ञ डॉक्टरों की सलाह उपलब्ध कराई गई है। आयुष्मान भारत योजना के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश अग्रणी है। अब तक प्रदेश में 4 करोड़ से अधिक आयुष्मान कार्ड बनाए जा चुके हैं, जिनमें 99.16 लाख कार्डों का आधार द्रू-यूड्डल्ट

सत्यापन हो चुका है। 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के 9 लाख वरिष्ठ नागरिकों के कार्ड बनाए गए हैं। यह योजना गरीब और जरूरतमंद परिवारों के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा की एक मजबूत गारंटी बन चुकी है। 70 वर्ष से अधिक उम्र के नागरिकों के आयुसामान कार्ड बनाने में मध्यप्रदेश शीर्ष पर है। प्रदेश में पैपेंमश्री एयर एम्बुलेंस सेवा की शुरुआत की गई है। इससे दूर-दराज के क्षेत्रों से गंभीर मरीजों को तत्काल बड़े अस्पतालों में पहुंचाकर जीवनरक्षक उपचार उपलब्ध कराया जा रहा है। यह सेवा स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार और सुधार में एक महत्वपूर्ण कदम है। चिकित्सा शिक्षा को मजबूत करने के लिए प्रदेश में मेडिकल कॉलेजों का विस्तार किया गया है। वर्ष-2003 तक प्रदेश में केवल 5 शासकीय मेडिकल कॉलेज थे, जो अब बढ़कर 17 हो गए हैं। एमबीबीएस सीटों की संख्या 720 से बढ़कर 2,575 हो गई है। आगामी 2 वर्षों में 8 और शासकीय मेडिकल कॉलेज बनाये जाएंगे। इसके अलावा, 12 जिलों में सार्वजनिक-निजी भागीदारी के तहत मेडिकल कॉलेजों की स्थापना की प्रक्रिया जारी है। प्रदेश में नर्सिंग और पैरामेडिकल शिक्षा संबंधी सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिये सभी आवश्यक प्रबंध किये जा रहे हैं। वर्तमान में 24 शासकीय नर्सिंग कॉलेज संचालित हैं, 14 और मेडिकल कॉलेजों में नर्सिंग कॉलेज स्थापित किए जा रहे हैं। इससे प्रदेश में जल्द ही 38 नर्सिंग कॉलेज हो जाएंगे।

## भारत को सचमुच एक खुशियों भरे भविष्य की ओर ले गए डॉ. मनमोहन सिंह

श्रुति व्यास

सिर्फ दस साल पहले की बात है, मगर मानों जमाना गुजर गया हो। दस साल पहले भारत भूखा था नए विजन, नई ट्रॉपिक का। हर कोई तरकी और अच्छे दिनों के लिए फडफडाता हुआ था। दस साल पहले लग रहा था, सबकी फील थी, भारत बढ़ रहा है। भारतीय आगे बढ़ रहे हैं। आज, लफ़ाज़ी और प्रोफेंडा है। मैं, सन् 2007 में, स्काटलैंड में सेंट एंड्रयूज विश्वविद्यालय में पढ़ती थी। भारत की राजनीति की न सुधर थी और न ज्यादा जानकारी। पतझड़ के अधिकारी दिनों की एक सर्द दोपर में, मैं, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर अपनी टुटोरिअल क्लास शुरू होने का इंतजार कर रही थी। विश्वविद्यालय की इमारत खामोश थी, मानों आराम कर रही हो। सभी लोग लंच के लिए गए हुए थे। मैं लंच और सुकून चैन के मूँड में थोड़ी जल्दी वापस पहुंच गई। मेरे अलावा वहां एक और व्यक्ति था, जो अपने कपड़ों से खांटी अमीर, कुलीन अंग्रेज लग रहा था। लेकिन वह था एक मेक्सिकन रेस्सजादा जो स्विटजरलैंड में रहता था। दुआ-सलाम के बाद हम आमने-सामने बैठ गए और मैं खाना शुरू करने ही वाली थी कि उसने मेरे पर सवाल दिया, क्या तुम्हे ईंडियन होने पर गर्व है? मैंने हैरानी और नाराजी से उसे देखा। वह मेरे चैन, इतिहासन से पैनिनी इन्डोटिटो के स्वाद में खलत थी। वो आंखे फैलाकर लगातार मुझे धूर रहा था। मेरा जबाब जानने को बेकब था। वो मैंने अपना सैंडविच लपेटे हुए उसकी ओर देखा और बेलौस जबाब दिया, हां, बिलकुल है। लेकिन वो मेरे जबाब से न तो खुश हुआ और ना उसे उस पर भरोसा हुआ। उसने दुबारा पूछा, उछाला, क्या तुम्हे अपने मेक्सिकन होने पर गर्व नहीं है। उसने तपाक से कहा नहीं। मैंने हैरानी से उसकी ओर देखा। मैं सोच रही थी कि किसी को अपने देश से प्यार न हो, भला ऐसा कैसे संभव है! वह भी शायद मेरी ओर देखते हुए सोच रहा था कि इसका उल्ट कैसे संभव है। इसके पहले कि चर्चा आगे बढ़ती, छात्रों के लौटने का सिलसिला शुरू हो गया। हम दोनों अपने-अपने समूहों से घिर गए और बातचीत यहीं समाप्त हो गई। इसके बाद कभी वह अधूरी चर्चा पूरी न हो सकी। लेकिन मेरे मन में हमेशा सवाल कोई जवाब रहा कि उसके मन में ऐसा सवाल क्यों आया? जब मैं स्काटलैंड गई थी तब भारत दृढ़ गति से फल-फूल रहा था जबकि ब्रिटेन मंदी में झूब-उत्तर रहा था। जैसा कि मैंने विदेशी की धूंधली यादें हैं जब सुषमा स्वराज ने एक बड़ा तमाशा किया था। उन्होंने धमकी दी थी कि अगर सोनिया गांधी प्रधानमंत्री बनी तो वे अपना सिर मुंडवा कर सन्यासिन बन जाएंगी। मुझे यह भी याद है कि किस तरह सोनिया गांधी ने विपक्ष के भारी शोर-शाब्दे के बीच यह सिद्ध किया था कि उनका कद उन सबसे ऊचा है। उन्होंने साफ़ कहा कि वे प्रधानमंत्री बनना नहीं चाहतीं और माहौल उत्साहपूर्ण था। विकसित देशों में रह रहे मेरे मित्र कहते थे, कम से कम तुम्हारे पास तो वापस जाने का विकल्प है ही। भारत में आसानी से तुम्हे काम मिल जाएगा। मैं गर्वित और अच्छा फील करती थी। भारत बदल रहा था और हरेक व्यक्ति इसे देख और भर देंगे और यहीं हुआ भी। प्रधानमंत्री बतौर वे भारत को सचमुच एक खुशियों भरे भविष्य की ओर ले गए। दुनिया में तब भारत पर विश्वास था।

सन् 1991 में उन्होंने जो बीज बोए थे उनकी फसल काटने का वक्त आ चुका था। सन् 2004 से लेकर 2014 एक बच्ची बतौर मेरा जीवन उदास नहीं था। हम रोज एक घंटे कम्प्यूटर का इस्तेमाल कर सकते थे और शाम को केबिल टीवी देख सकते थे, हमें स्कूल ले जाने के लिए कार थी और समय-समय पर हमें नए आधुनिक खिलौने और गेम मिल जाते थे। ये सभी उस समय भारत में आसानी से उपलब्ध थे। हम लोगों को सिनेमा भी ले जाया जाता था और छुट्टियों में हम शहर के बाहर भी जाते थे। आज जब मैं पीछे मुड़कर उस दौर को याद करती हूं तो मुझे लगता है कि हमारा बचपन खुशनुमा इसलिए था क्योंकि उस दौर में भारत और भारतीय दोनों खुश थे, फलतूकी चिंताएं नहीं थी। सब आगे बढ़ रहे थे।

और तब उस समय, उसके पीछे थे डॉ. मनमोहन सिंह। मुझे सन् 2004 की धूंधली यादें हैं जब सुषमा स्वराज ने एक बड़ा तमाशा किया था। उन्होंने धमकी दी थी कि अगर सोनिया गांधी दोषम दर्जे के नाराकों जैसा व्यवहार नहीं होता था। हमें सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। देश जिस तेज गति से आगे बढ़ रहा था उसे भी दुनिया प्रशंसा की निगाह से देख रही थी। हम चीन से मुकाबिल थे और विकसित देशों के बलब की सदस्यता हासिल करने की ओर बढ़ रहे थे। आर्थिक मामलों की डॉ मनमोहन सिंह की समझ और उनकी बृद्धिमत्ता ने उन्हें पूरी दुनिया में सम्मान का पात्र बनाया था। देश में एक तरह का चैन और सुकून था। सबको पता था कि शोरी पर बैठा आदमी समाज को बांटने वाला नहीं है, वह लोगों को आपस में लड़ाना नहीं चाहता और उसके राज से किसी को भी असुरक्षित महसूस करने की जरूरत नहीं है। उन दिनों मैं भारतीय राजनीति से दूर थी परंतु मुझे यह जरूर याद है कि उस दौर को राजनीति परिपक्व थी, अर्थरूपी थी और काफी तक विचारधारा पर समुद्धि के रास्ते पर आगे बढ़ाया। उस पहले से ज्यादा शक्तिशाली बनाने में भी योगदान दिया। उनके कार्यकाल में अर्थव्यवस्था नौ प्रतिशत की गति से बढ़ी। इतना ही नहीं भारत को लंबे समय बाद अंतर्राष्ट्रीय मंच पर रुतबा हासिल हुआ। उन्होंने अमेरिका के साथ ऐतिहासिक परमाणु संधि की। आईटी सेवाओं के नियांत के कारण देश में डेर सारे डालर आ रहे थे। 1991 के मध्य में भारत का विदेशी मुद्रा भंडार करीब एक अरब डालर का था। उनके कार्यकाल की समाप्ति के समय इस भंडार में 280 अरब डालर थे और अब उसके करीब दो गुना है। भारत शाईन कर रहा था और भारतीय दोनों खुश थे, फलतूकी चिंताएं नहीं थी। सब आगे बढ़ रहे थे।

और तब उस समय, उसके पीछे थे डॉ. मनमोहन सिंह। मुझे सन् 2004 की धूंधली यादें हैं जब सुषमा स्वराज ने एक बड़ा तमाशा किया था। उन्होंने धमकी दी थी कि अगर सोनिया गांधी प्रधानमंत्री बनी तो वे अपना सिर मुंडवा कर सन्यासिन बन जाएंगी। मुझे यह भी याद है कि किस तरह सोनिया गांधी ने विपक्ष के भारी शोर-शाब्दे के बीच यह सिद्ध किया था कि उनका कद उन सबसे ऊचा है। उन्होंने साफ़ कहा कि वे प्रधानमंत्री बनना नहीं चाहतीं और विकसित देशों के बलब की सदस्यता हासिल करने की ओर बढ़ रही थी। हम चीन से मुकाबिल थे और विकसित देशों के बलब की सदस्यता हासिल करने की ओर बढ़ रही थी। उनके जीवन उनके जीवन से बेहतर होगा। उस समय भारत सपने देख रहा था। उसके दिल में डेर सारी महत्वाकांक्षाएं हिलोरे मार रही थीं। आने वाला समय खुशनुमा और सुनहरा लग रहा था। परंतु अच्छा दौर बहुत लंबा नहीं चलता। जब मैं भारत वापिस आई तब तक मनमोहन सिंह का सुनहरा काल और उस दौर की राजनीति अस्त हो चली था। भ्रष्टाचार के डेर सारे आरोप थे और झूट का बहुत बड़ा जाल बुना जा चुका था। अपने दूसरे प्रधानमंत्री के तौर पर तो दर्जा होगा ही मगर एक ऐसे प्रधानमंत्री के तौर पर भी दर्जा होगा जिसे यह नहीं मालूम कि उसे कब रिटायर हो जाना चाहिए। गुहा ने कहा था, यह साफ़ है। कि वे थके हुए हैं, गाफिल हैं और उनमें जरा सी भी ताकत नहीं बची है। यह सही हो या गलत मगर एक बात तो तय है कि आज जिस भारत को डॉ सिंह और नहीं कहें उन्होंने मुस्कराते हुए लेकिन मजबूती से कहा था कि आज के मीडिया या विपक्ष की तुलना में इतिहास में अधिक उदार होगा। उनके शब्द किन्तु सही थे। उनकी मृत्यु ने संसद में शेरो-शायरी होती थी और असहमतियां, सहमतियों में और सहमतियां, असहमतियों में बदलती रहीं थीं। सबकी अपनी-अपनी वफादारियां थीं और अपनी-अपनी पसंद-नापसंद थीं, मगर एक-दूसरे से नफरत का भाव नहीं था। मैंने डॉ सिंह और प्रधानमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल का बहुत विस्तार से अध्ययन नहीं किया है लेकिन मैं एक बात जानती हूं और वह यह कि उन्होंने मुझे फलती-फूलती अर्थव्यवस्था पर गर्व करने का मौका दिया। सन् 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद से भारतीयों को लगाने लगा था कि उनके बच्चों का जीवन उनके जीवन से बेहतर होगा। उस समय भारत सपने देख रहा था। खरी-खोटी सुना सकें, उससे असहमत हो सकें और उसके आरोप गुहा ने कहा था कि इतिहास में एक जबरदस्त आलोचना दुर्भाग्यात्मक लगता है। आज जबरदस्त आलोचना के लिए लगता है, अवास्तविक लगता है। यह जैसा विपक्ष के गुस्से का खुलकर सामना किया जाता है। एक ऐसा प्रधानमंत्री जो सत्ता के पीछे आगे बढ़ रहा है। बल्कि उसने हमारे पास एक ऐसा प्रधानमंत्री था जो सत्ता के पीछे आगे बढ़ रहा है। भारत शाईन कर रहा था और भारतीयों के चेहरों पर भी चमक थी - भारत में भी और विदेश में भी। हमारे साथ कहीं दोयम दर्जे के नाराकों जैसा व्यवहार नहीं होता था। हमें सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। देश जिस तेज गति से आगे बढ़ रहा था उसे भी दुनिया प्रशंसा की निगाह से देख रही थी। हम चीन से मुकाबिल थे और विकसित देशों के बलब की सदस्यता हासिल करने की ओर बढ़ रहे थे। आर्थिक मामलों की डॉ मनमोहन सिंह की समझ और उनकी बृद्धिमत्ता ने उन्हें पूरी दुनिया में सम्मान का पात्र बनाया था। उस समय भारत सपने देख रहा था। उसके दिल में डेर सारी महत्वाकांक्षाएं हिलोरे मार रही थीं। आने वाला समय खुशनुमा और सुनहरा लग रहा था। परंतु अच्छा दौर बहुत लंबा नहीं चलता। जब मैं भारत वापिस आई तब तक मनमोहन सिंह का सुनहरा काल और उस दौर की राजनीति अस्त हो चली था। भ्रष्टाचार के डेर सारे आरोप थे और झूट का बहुत बड़ा जाल बुना जा चुका था। अपने दूसरे प्रधानमंत्री के तौर पर तो दर्जा होगा ही मगर एक ऐसे प्रधानमंत्री के तौर पर भी दर्जा होगा जिसे यह नहीं मालूम कि उसे कब रिटायर हो जाना चाहिए। गुहा ने कहा था, यह साफ़ है। कि वे थके हुए हैं, गाफिल हैं और उनमें जरा सी भी ताकत नहीं बची है। यह सही हो या गलत मगर एक बात तो तय है कि आज जिस भारत को डॉ सिंह और उन्होंने शर्मिदा किया गया था और उन पर एक नाकाम प्रधानमंत्री का लेबल चस्पा कर दिया गया। मगर वे कभी अपने विरोधियों के स्तर पर नहीं उतरे। सन् 1991 में उन्होंने जो बीज बोए थे उनकी फसल काटने का वक्त आ चुका था। सन् 2004 से लेकर 2014

विपक्ष को भी वाक्य की गांठ बांधनी होगी कि 'बंटेंगे तो कटोंगे'

अजोत द्विवेदी

दुनिया भर में अंग्रेजी शब्दकोश के लिए वर्ष के शब्द चुने जाते हैं। जैसे ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ने 'ब्रेन रॉट' को वर्ष का शब्द चुना है। जब से इसे वर्ष का शब्द चुना गया है, इसके बारे में जानने के लिए करोड़ों लोगों ने इसे सर्च किया। भले ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ने इसे वर्ष 2024 का शब्द चुना लेकिन असल में यह शब्द समकालीन समय की वास्तविकताओं का प्रतीक शब्द है। जिस तरह से सोशल मीडिया का कंटेंट देखने पर अरबों घंटे बरबाद हो रहे हैं उससे औसत दिमाग सड़ जाने की स्थिति में ही पहुंच गया है। 'ब्रेन रॉट' यानी दिमागी सड़ाध ही वह कारण है, जिसकी वजह से निहित स्वार्थों द्वारा मिसइन्फॉर्मेशन और डिसइन्फॉर्मेशन कैप्सेन चला कर लोगों के दिमाग को आसानी से प्रभावित किया जा रहा है। मरियम वेबस्टर डिक्शनरी ने वर्ष 2024 के लिए 'पोलाइजेशन' को वर्ष का शब्द चुना है। उसने वैसे तो अमेरिका के राष्ट्रपति के चुनाव में नस्ल के आधार पर हुए ध्रुवीकरण की वजह से इसे वर्ष का शब्द चुना है लेकिन कहने की जरूरत नहीं है कि भारत के चुनाव और रोजमर्रा की राजनीति के लिहाज से भी यह बहुत उपयुक्त शब्द है। कह सकते हैं कि मरियम वेबस्टर डिक्शनरी का इस वर्ष का शब्द भारत की पिछले कई वर्षों की राजनीतिक हकीकत को प्रकट करने वाला है। ऐसे ही कैम्ब्रिज डिक्शनरी ने 'मैनिफेस्टो' को वर्ष का शब्द चुना है। यह भारत की वास्तविकताओं के लिए यह थोड़ा अनजाना शब्द है क्योंकि यहां कुछ भी मैनिफेस्टो नहीं होता है यानी बहुत योजनाबद्ध तरीके से सब कुछ तय करके कुछ नहीं किया जाता है। यहां ज्यादातर चीजें भगवान भरोसे होती हैं। इस सनातन मान्यता को तुलसीदास ने 'होइडे सोर्ज जो राम रचि राखाठ' के दोहे नियति की 'मैनिफेस्टो' करती है। दुनिया में वर्ष के शब्दों की तलाश के बारे में पढ़ते हुए मन में यह सबाल उठा कि इस वर्ष भारत में कौन सा शब्द या कौन सी बात ऐसी है, जिसे वर्ष की बात कह सकते हैं? तीन शब्दों से बना यह जुमला कि 'बंटोंगे तो कटोगे०, वर्ष 2024 की भारत की बात है। यह जुमला एक खास संदर्भ में कहा गया है। इसके जरिए देश के हिंदुओं से आह्वान किया गया है कि उन्हें एकजूट रहना है ताकि उनके चिन्हित 'दुश्मन० यानी मुसलमान उनको काट नहीं सकें।

इस शाब्दिक अर्थ से अलग इसका भावार्थ यह है कि, 'भाजपा को बोट दें०। परंतु इस शब्दार्थ और भावार्थ से अलग यह जुमला कई और अर्थ प्रतीकित करने वाला है। इसका इस्तेमाल मजाक में ही सही लेकिन बहुत सारी चीजों के लिए होने लगा है। यहां तक कि दोस्तों के बीच सहज भाव से यह जुमला बोला जा रहा है तो परिवारों में भी एकजूटता की जरूरत बताने के लिए इस जुमले का इस्तेमाल हो रहा है। कह सकते हैं कि अर्थ और अभिप्राय की दोनों दृष्टि से यह जुमला निर्धारित सीमाओं को तोड़ कर आगे बढ़ गया है। इस जुमले का एक राजनीतिक पाठ तो वह है, जिसे भावार्थ के रूप में ऊपर बताया गया है लेकिन उससे अलग इसका दूसरा पाठ देश की विपक्षी पार्टियों के लिए खास संदेश के रूप में है। वर्ष 2024 में विपक्ष की राजनीति व्यापक एकजूटता के साथ शुरू हुई थी। उस समय तक यह जुमला बाला नहीं गया था। लेकिन विपक्ष ने कुछ भी मैनिफेस्टो नहीं होता है यानी बहुत योजनाबद्ध तरीके से सब कुछ तय करके कुछ नहीं किया जाता है। यहां ज्यादातर चीजें भगवान भरोसे होती हैं। इस सनातन मान्यता को तुलसीदास ने 'होइडे सोर्ज जो राम रचि राखाठ' के दोहे पाठियों को भी इस जुमले के अर्थ और अभिप्राय को समझने की जरूरत है। उनके लिए एकजूटता का अर्थ चुनावी जीत तक सीमित है। उसका कोई सांस्कृतिक, सामाजिक या धार्मिक आयाम नहीं है। इसलिए जैसे ही चुनाव खत्म हुआ है उनकी एकता टूटने लगी है। वे जीत या हार के चुनावी नतीजे को अपने और अपनी पार्टी के राजनीतिक हित के हिसाब से देखते हैं और फिर इस आधार पर व्याख्या करते हैं कि एकजूटता से उनको कितना फायदा हुआ और दूसरे लोगों ने कितना लाभ उठाया। तभी लोकसभा चुनाव के बाद कांग्रेस व उसकी सहयोगी पार्टियों में यह घमासान छिड़ गया कि साथ होने से किसको ज्यादा और किसको कम फायदा हुआ है। सब पार्टियां श्रेय लेने लगीं कि विपक्ष उसकी वजह से जीता है। तभी लोकसभा चुनाव के तुरंत बाद विपक्षी गठबंधन में दरार दिखने लगीं, जो राज्यों के चुनाव और संसद का शीतकालीन सत्र समाप्त होने तक चौड़ी खाई में तब्दील हो चुकी है। अगर विपक्षी पार्टियां 'बंटोंगे तो कटोगे० जैसे वर्ष 2024 के सूत्र को अर्थ और अभिप्राय यानी 'लेटर एंड स्प्रिटर० में नहीं लंगी तो उनके लिए आगे की राजनीति मुश्किल होती जाएगी। उनको समझना होगा कि आने वाले अनेक वर्षों तक भाजपा की राजनीति इस सूत्र वाक्य के आधार पर चलेगी। भाजपा को बहुसंख्यक हिंदुओं को इतिहास याद दिल कर यह संदेश स्थापित करना है कि 'बंटोंगे तो कटोगे०। विपक्ष को इस संदेश और इससे बनने वाले नैरीटिव के बरक्स अपना एक विर्मश स्थापित करने की चुनौती है और इस चुनौती का मुकाबला करने की प्राथमिक शर्त एकजूटता है। यानी विपक्ष को भी इस सूत्र वाक्य की गांठ बांधनी होगी कि लेकिन इसका अर्थ और अभिप्राय

## रोहित का कप्तान होने के कारण अंतिम टेस्ट में भी खेलना तय : कलार्क

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान माइकल कलार्क ने भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा पर खेल बल्लेबाजी के लिए निशाना साधा है। कलार्क के अनुसार रोहित कप्तान होने के कारण ही सिडनी में पांचवें टेस्ट में भी खेलेंगे हालांकि इस सीरीज में वह रन बनाएंगे विफल रहा है। कलार्क ने तंज करते हुए कहा कि ऐसा लाता है कि जब वह चाहेंगे तभी संन्यास लेंगे। भारतीय बोर्ड उन्हें हटाये ऐसा मुझे नहीं लगता। हालांकि रन नहीं बनाने के कारण उन्हें दबाव-गावकर ट्रॉफी में अब तक तीन टेस्ट मैच खेले हैं पर इसमें कोई अहम पारी नहीं खेली है। कलार्क ने कहा कि कुछ खिलाड़ियों के लिए टीम में बने रहने कप्तानी सहायक होती है, जबकि अन्य के लिए नहीं। मुझे

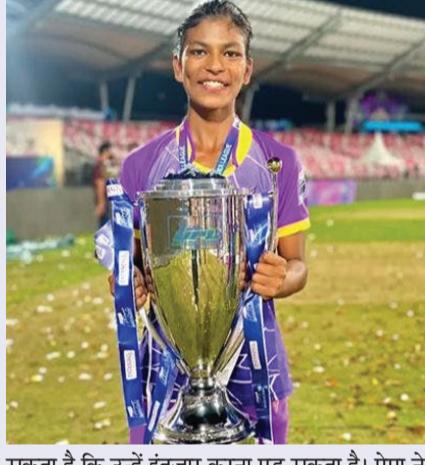


निश्चित रूप से लगता है कि वह सिडनी में खेलेंगे। मुझे नहीं लगता कि उन्हें टीम से बाहर किया जाएगा। मुझे लगता है कि रोहित शर्मा ने यह अधिकार हासिल किया है और वह कप्तान होने के लिए इसके कारण उन्हें खेलने में वह सभी कार्यकारी समिति की एक सार्थक बैठक हुई थी और सभी सदस्य महासंघों के अलावा आईएसएसएफ अध्यक्ष लुसियानो रॉसी ने भारत की शीर्ष अंतर्राष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिताओं को मेजबानी करने और खेल को वैश्विक स्तर पर लगाता है और उन्हें उम्मीद है कि वह कुछ रन बनाएगे। कलार्क का ये भी मानना है भारतीय टीम प्रबंधन को युवा औलाउंडर कुमार रही को बल्लेबाजी के लिए ऊपरी क्रम में भेजना चाहिये क्योंकि वह कारण उन्हें कुछ सुविधाएं मिलना तय है। उन्होंने कहा कि हालांकि वह सिडनी में खेलेंगे। मुझे नहीं लगता कि उन्हें टीम से बाहर किया जाएगा। मुझे लगता है कि रोहित कप्तानी के लियाज पता कि रोहित कप्तानी के लियाज से कैसा महसूस करते हैं। अपीली है और वह कप्तान होने के लिए ऊपरी क्रम का लियाज है। उन्होंने कहा कि वह निश्चित रूप में खेलेंगे।

से सिडनी में खेलेंगे। रोहित का कप्तान के तौर पर औसत 30.58 है लेकिन इससे पहले उन्होंने 46.87 की औसत रन बनाए थे। वही ऑस्ट्रेलिया के ही एक अन्य पूर्व कप्तान आरोन फिच ने भी अपना पक्ष खेला। उन्होंने कहा कि मैं लिए चिंताकाल बात यह है कि पर्याप्त में खेले टेस्ट में बुमराह की कप्तानी में भारतीय टीम को प्रदर्शित कितना अच्छा रहा पर रोहित के वापस आने के बाद से टीम लय में नहीं दिखती है। रोहित अब भी एक महान खिलाड़ी है, उन्हें खेलते हुए देखना अनन्दर लगता है और उन्हें उम्मीद है कि वह कुछ रन बनाएगे। कलार्क का ये भी मानना है भारतीय टीम प्रबंधन को युवा औलाउंडर कुमार रही को बल्लेबाजी के लिए ऊपरी क्रम में भेजना चाहिये क्योंकि वह कारण उन्हें कुछ सुविधाएं मिलना तय है। उन्होंने कहा कि हालांकि वह सिडनी में खेलेंगे। मुझे नहीं लगता कि उन्हें टीम से बाहर किया जाएगा। मुझे लगता है कि रोहित कप्तानी के लियाज पता कि रोहित कप्तानी के लियाज से कैसा महसूस करते हैं। अपीली है और वह कप्तान होने के लिए ऊपरी क्रम का लियाज है। उन्होंने कहा कि वह निश्चित रूप में खेलेंगे।

## डबल्यूपीएल में बेहतर प्रदर्शन करना चाहेगी लेग स्पिनर प्रेमा रावत

बैंगलुरु। उत्तराखण्ड के लिए घोलू फिकेट खेलने वाली लेग स्पिनर प्रेमा रावत महिला प्रीमियर लीग (डबल्यूपीएल) के लिए हुई मिसी नीलामी के बाद सभी को नजरों में आई है। प्रेमा अपनी स्पिन गेंदबाजी के अलावा एक अच्छी फील्डर भी है। प्रेमा ने इसी साल हुए उत्तराखण्ड प्रीमियर लीग में भी अच्छा प्रदर्शन कर सभी को प्रभावित किया था। वह निचले प्रेमा लोअर और्डर में शनदार बल्लेबाजी भी कर सकती है। असरीबी के दल में अशा शोभना के रूप में फहले से ही एक शनदार लेग स्पिन गेंदबाज है और इसके बाद भी टीम ने प्रेमा रावत के अपने साथ नीलामी में शामिल किया है। इसका करण करण शोभना का पूरी तरह से फिट नहीं होता है। ऐसे में प्रेमा का लियाज है कि उन्हें डंबिजर करना चाह रही है। यही कारण है कि लेग स्पिनर के तौर पर प्रेमा रावत की टीम के साथ जाओड़ा गया है। पिछले सत्र में स्मृति मध्यान की कप्तानी में आसीबी ने शनदार प्रदर्शन किया था। ऐसे में प्रेमा सकता है कि उन्हें डंबिजर करना उन्होंने गेंदबाजी में दमदार खेल दिखाते हुए 54 विकेट लिए जबकि बल्लेबाजी करते हुए 184 रन बनाए हैं।



सकता है कि उन्हें डंबिजर करना पड़ सकता है। प्रेमा ने अब तक सभी प्राप्तियों को मिलाकर कुल 49 मैच खेले हैं। इस दौरान उन्होंने गेंदबाजी में दमदार खेल दिखाते हुए 54 विकेट लिए जबकि बल्लेबाजी करते हुए 184 रन बनाए हैं।

## सिनर और अल्कराज से निपटने रणनीति बनाएंगे जोकोविच

ब्रिस्बेन। सर्वियाई टेनिस स्टार नोवाक जोकोविच ने कहा है कि उनका लक्ष्य 12 जनवरी से शुरू होने वाले ऑस्ट्रेलियाई ओपन से पहले अपने नए कोच एंडी मर्टिन के साथ मिलकर रणनीति बनाना है। जिससे की यात्रिक सिनर और कालोंस अल्कराज जैसे युवा खिलाड़ियों से मुकाबला किया जा सके। विवर के नंबर एक खिलाड़ी 23 वर्षीय सिनर ने गत वर्ष औस्ट्रेलियाई और अमेरिकी ओपन तथा 21 वर्षीय अल्कराज ने विंबलडन और फ्रेंच ओपन में पुरुष एकल के खिलावाक जीते थे। ऐसे में अब जोकोविच इन खिलाड़ियों से निपटने के लिए अपनी तैयारियों को पुख्ता करना चाहता है। जोकोविच ने कहा कि मर्टे के साथ मिलकर सिनर और अल्कराज के बीच दोनों खिलाड़ियों को अपनी तैयारियों को पुख्ता करने के लिए उनके खिलाड़ियों के लियाज के बाद वह संयोग ले सकते हैं। उपरी को लेकर मैक्स्ट्रीनी ने कहा, 'मुझे टेस्ट टीम में प्राप्त जबकि मिलने का अवसर बन रहा है। खिलाड़ियों के साथ मिलकर रणनीति बनाना चाहता है। उपरी को लेकर मैक्स्ट्रीनी ने टेस्ट क्रिकेट में डेंगे के संबंध में कहा, 'इमानदारी से कहूँ तो मैं उनकी जगह लेना पसंद करूँगा।' इसके लिए उपरी को लेकर मैक्स्ट्रीनी ने टेस्ट क्रिकेट में डेंगे के संबंध में कहा, 'मुझे टेस्ट टीम में प्राप्त जबकि मिलने का अवसर बन रहा है। खिलाड़ियों के साथ मिलकर रणनीति बनाना चाहता है। उपरी को लेकर मैक्स्ट्रीनी ने टेस्ट क्रिकेट के लिए बहुत समय नहीं था। यह सब बहुत जल्दी हो जाएगा।' फिर मैं यहां 210 क्रिकेट (बिंग बैश लाग में) कुछ भी करना पड़े।

## इस साल भारत में होगी ज्यूनियर विश्व कप निशानेबाजी

नई दिल्ली। भारत इस साल ज्यूनियर विश्व कप निशानेबाजी की मेजबाजी करेगा। विश्व कप निशानेबाजी में राइफल, पिस्टल और शॉटगun की प्रतियोगिताएं। यह हाल के दिनों में का तीसरा शीर्ष अंतर्राष्ट्रीय निशानेबाजी खेल महासंघ (आईएसएसएफ) का टूर्नामेंट होगा जो भारत में आयोजित किया जाएगा। राष्ट्रीय महासंघ के अध्यक्ष कलकेश नारायण सिंह देव ने कहा, "पिछले महीने रोम में आईएसएसएफ की कार्यकारी समिति की एक सार्थक बैठक हुई थी और सभी सदस्य महासंघों के अलावा आईएसएसएफ अध्यक्ष लुसियानो रॉसी ने भारत की शीर्ष अंतर्राष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिताओं को मेजबाजी करने और खेल को वैश्विक स्तर पर प्रवर्द्धित करने के लिए उत्साहित हैं।"



वही भारतीय राष्ट्रीय राइफल अब्दूल्लार के अंत तथा नवबर की सभा (एनआरआई) के शुरुआत के दौरान है। हम आंतरिक महासंचिच सूलतान सिंह ने कहा, "हमें तब इसकी उम्मीद थी कि वह आंतरिक राष्ट्रीय राइफल के बाद उन्हें टीम में जाह मिल जाएगा।" मैक्स्ट्रीनी को बॉर्डर-गावकर ट्रॉफी के पहले तीन टेस्ट मैचों में पराया शुरू करने का अवसर मिल था पर वह विफल रहे। ऐसे में चौथे टेस्ट के लिए उन्हें बाहर कर युवा सैमों कोस्टास का शामिल करना चाहिया। यह खिलाड़ियों को अधिक बदलाव करने के लिए उन्हें टीम में जाह मिल जाएगा।" इसके बाद उन्हें टीम में जाह करने के लिए एक सिंटर-अब्दूल्लार में जाह करने के लिए उत्साहित है। अप्रैल और जून के दौरान विश्व कप शामिल हैं। साल 2023 में सीनियर विश्व कप भी भारत में हुआ था।

## मैक्स्ट्रीनी को उम्मीद, ख्वाजा के संन्यास के बाद उन्हें मिलेगा अवसर

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया के युवा सलामी बल्लेबाज नामन मैक्स्ट्रीनी को उम्मीद है कि वह आने वाले समय में टीम में वापसी में सफल रहें। मैक्स्ट्रीनी को उम्मीद है कि युवा सलामी बल्लेबाज उसमान खानाजी के खेल को अलविदा करने के बाद उन्हें टीम में जाह मिल जाएगा। मैक्स्ट्रीनी को बॉर्डर-गावकर ट्रॉफी के पहले तीन टेस्ट मैचों में पराया शुरू करने का अवसर मिल था पर वह विफल रहे। ऐसे में चौथे टेस्ट के लिए उन्हें बाहर कर युवा सैमों कोस्टास का शामिल करना चाहिया। यह खिलाड़ियों के साथ मिलकर रणनीति बनाना चाहिया। यही खिलाड़ियों को लेकर मैक्स्ट्रीनी ने कहा, "मुझे टेस्ट टीम में चौथे टेस्ट के संबंध में कहा, 'इमानदारी से कहूँ तो मैं उनकी जगह लेना पसंद करूँगा।' मैक्स्ट्रीनी ने टेस्ट क्रिकेट में डेंगे के संबंध में कहा, 'मैक्स्ट्रीनी भी नीला टेस्ट का एक दिन रात के लिए बहुत समय नहीं था। यह सब बहुत जल्दी हो जाएगा।' फिर मैं यहां 210 क्रिकेट (बिंग बैश लाग में) कुछ भी करना पड़े।" मैक्स्ट्रीनी ने कहा कि वह अपने भवित्व को लेकर चयनकार्यों से बात करेगा तथा वह किसी भी नीला टेस्ट के लिए बहुत समय नहीं था। यह सब बहुत जल्दी हो जाएगा।" उम्मीद है कि एक अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट के लिए उत्साहित है।



## Police close RJ Simran's suicide case, fans call for deeper probe

**Agency:** The tragic death of 26-year-old RJ and social media influencer Simran Singh, known as 'Jammu Ki Dhadkan,' has left her fans in disbelief. While the Gurugram police have concluded their investigation, deeming it a case of suicide, many of her followers suspect foul play. According to the police, Simran was found hanging in her rented house in Sector 47, Gurugram. The postmortem confirmed the cause of death as hanging, and her family stated in a written declaration that she had been troubled for some time, leading to her decision to take her own life. No complaints or accusations were made by the family, prompting the police to close the case. Inspector Sunil Kumar, SHO of Sadar police station, said: "The family did not hold anyone responsible and requested no further action. Based on



the family's statement and the postmortem report, the case has been closed."

However, Simran's fans, who admired her for her vibrant and positive persona, find it difficult to believe she would take such a step. Her last Instagram post, dated December 13, featured her dancing on a beach with the caption, "Just a girl on the beach with endless giggles and her gown." The stark contrast between her joyous demeanour online and the tragic news has left many followers questioning the circumstances of her death. One user wrote, "She was so confident and happy. How can someone like her commit suicide without leaving any note? This feels like murder." Another commented, "If she was depressed, she wouldn't have been posting videos. This needs further investigation."

## Vietnam Birth Rate Hits Record Low In 2024 Despite Propaganda

**Agency:** Vietnam experienced a significant drop in its birth rate in 2024, marking a concerning trend. According to Newsweek, the birth rate fell to 1.91 births per woman, the lowest since records began and below the replacement rate for the third consecutive year. This follows declines from 1.93 in 2023 and 2.01 in 2022. A replacement rate of 2.1 is considered essential for maintaining population stability. The declining birth rate raises concerns about sustaining economic development and providing for the growing elderly population. Pham Vu Hoang, deputy director of the health ministry's population authority, warned that Vietnam's population of 100 million could begin to shrink by mid-century, according to the Vietnam News Agency. Pham stated that if the replacement rate

is restored and maintained, annual population growth could reach 0.17 per cent, or 200,000 people per year. However, current projections suggest an annual decline of 0.04 per cent between 2054 and 2059, accelerating to 0.18 per cent, or 200,000 people annually, between 2064 and 2069.

Deputy Minister of Health Nguyen Thi Lien Huong highlighted Vietnam's gender imbalance of 112 male births for every 100 female births as another pressing issue, though recent figures show slight improvement. At a conference held by the health ministry's population department in Hanoi, Nguyen called for initiatives to improve "population quality," including enhanced elderly healthcare, better communication, and improved access to reproductive health and family planning services. Officials fear Vietnam may



follow the trajectory of other East Asian nations, such as China, Japan, South Korea, and Taiwan, where fertility rates have been steadily declining. Despite Vietnam's strong economic growth, with GDP increasing by over 5 per cent annually (except during the pandemic years), its ageing population poses challenges. By 2049, Vietnam is projected to

become a "super-aged society," with over 20 per cent of its population aged 65 or older.

Deputy Minister of Health Do Xuan Tuyen stated that the health ministry is studying and proposing policies to stabilize the fertility rate, drawing from global experiences. The ministry is drafting a population law, set to be presented to the National

Assembly in 2025. The proposed law aims to sustain replacement-level fertility rates, with measures tailored to different demographics and regions. Provisions include encouraging women to give birth before the age of 35 and eliminating penalties for having a third child. Le Thanh Dung of the Vietnam Population Authority told Vietnam Plus.

## Not VD Savarkar, Name Delhi College After Manmohan Singh: Congress Student Body

**Agency:** The building of a brand new university named after right-wing ideologue VD Savarkar has unleashed a storm of protest from the Opposition Congress and its student wing, the NSUI. With Prime Minister Narendra Modi expected to lay the foundation stone for the Savarkar University tomorrow, the NSUI has demanded the university be named after former Prime Minister Dr Manmohan Singh, who died last month. The NSUI has written to PM Modi, making three demands: A world-class college under the University of Delhi named after Dr. Manmohan Singh; a Central University dedicated to his name; Inclusion of his life journey from a post-Partition student to a global icon in academic and political sphere. "Dr. Singh's legacy as a scholar, economist, and public servant embodies resilience, merit, and dedication to public welfare. Naming institutions after him will inspire generations and honor his transformative vision," their letter

read. The Congress has pointed out that there are numerous freedom fighters in the country and the government can choose from that pool. Even the Delhi University can be named after a freedom fighter, the party said, doubling down on its allegation that Savarkar was no freedom fighter.

"There were many freedom fighters who sacrificed their lives for the sovereignty and freedom of the country. Had they named the college after either one of them, it would have been a tribute to them," said Congress MP Dr Syed Naseer Hussain. "But since the BJP has no leaders or icons, they are promoting and legitimising those who supported the British Raj," he added. PM Modi will lay the foundation stone of Veer Savarkar College at Roshanpura, Najafgarh, which will have "state-of-the-art facilities for education besides an academic block in East Delhi and an academic block in Dwarka," read a statement from the Prime Minister's office released earlier today.

Manika Pahwa, along with her sister and parents, of consistent harassment. According to his sister, the abuse was not limited to financial pressures but extended to emotional manipulation. She claimed that Ms Pahwa had hacked into Mr Khurana's social media accounts and harassed him through multiple channels. "She, her sister, and her parents mentally tortured and harassed him. There is a video recording of around 59 minutes, in which Puncet has mentioned details of harassment he faced. The woman had even hacked Puncet's social media account," the sister said. Mr Khurana's mother alleged that her son suffered in silence and avoided sharing his troubles to protect his family from further distress. "She (Ms Pahwa) used to keep torturing him...I want justice for him," his mother said. On December 30, Mr Khurana allegedly had a heated conversation with Ms Pahwa. The call, which was recorded and is now with the police, revealed bitter exchanges over property and their co-owned bakery business, "For God's Cake." In the 15-minute call, Ms Pahwa is heard using derogatory language and accusing Puncet of ruining her life. "Beggar, tell me what have you asked for. I do not want to see your face. If you come in front of me, I will slap you. If the divorce is going on, will you remove me from the business? Then you

will say, 'if you threaten me, I will commit suicide,'" she said. Mr Khurana responded, "All of this doesn't matter anymore. Just tell me what you want." On December 31, at approximately 4:20 pm, the Delhi Police received information about the incident. Mr Khurana was found unresponsive on his bed with a mark around his neck. The police later confirmed that he died by hanging. A mobile phone containing Mr Khurana's video statement and the call recordings was seized as evidence. Mr Khurana and Ms Pahwa married in 2016 and initially operated the popular Woodbox Cafe together. However, within two years, their relationship soured, leading to mutual divorce proceedings. Despite court-mandated conditions for their separation, Ms Khurana's family alleges that Ms Pahwa repeatedly threatened to escalate the conflict, including filing false cases against them if her demands were not met. Days before the suicide, Ms Pahwa shared a cryptic social media post claiming she had endured "toxicity and narcissistic abuse" but was now free. Referring to her alleged abusers as "insecure cowards." However, Mr Khurana's family contends that allegations of abuse were a deliberate ploy to divert attention from her own actions. They allege that her public statements were timed to deflect scrutiny and preemptively frame

her as a victim. Mr Khurana's family claims that Ms Pahwa made five demands to settle their divorce, including Rs 70,000 per month as lawyer's fee.

Deputy Commissioner of Police (Northwest Delhi) Bhisham Singh confirmed that an inquiry is underway, with statements being recorded from both families. "The father of Puncet Khurana, said that his son was going through marital discord and alleged that his daughter-in-law harassed him, which led to his suicide," Bhisham Singh said. "We have seized the man's mobile phone, and the family's claims are being verified. An inquiry is underway with both families participating in the investigation. Manika's family has made counter-allegations, and a divorce case is also ongoing," he added. Police have retrieved call recordings, CCTV footage, and Mr Khurana's mobile phone for forensic analysis. The ongoing investigation will also explore the financial transactions and property disputes central to the case. Mr Khurana's suicide is not an isolated incident. Just last month, a Bengaluru tech executive named Atul Subhash died by suicide, leaving behind a 24-page note accusing his wife and her family of harassment. He alleged a campaign of legal and emotional abuse, concluding that his death was the only way to protect his elderly parents from further exploitation.

on YouTube four years ago, Jabbar speaking with a southern US accent boasted of his skills as a "fierce negotiator" as he advertised his property management services to potential clients. Criminal records reported by the New York Times show that Jabbar had two previous charges for minor offenses -- one in 2002 for theft and another in 2005 for driving with an invalid license. Jabbar was twice-married, according to the newspaper, with his second marriage ending in divorce in 2022, when he detailed experiencing financial problems in an email to his wife's lawyer. "I cannot afford the house payment," he reportedly wrote, adding that his real estate company had lost more than \$28,000 in the previous year, and that he had taken on thousands in credit card debt to pay for lawyers. President Joe Biden said, "There is no justification for violence of any kind, and we will not tolerate any attack on any of our nation's communities." President-elect Donald Trump linked the attack to illegal immigration. "When I said that the criminals coming in are far worse than the criminals we have in the country... it turned out to be true," Trump posted on social media.

## Abhinandan Murder case solved, Police claims it is a case of fratricide

Sagar Suraj

**MOTIHARI:** IN a country, where Lord Rama's brother Lakshman and Bharat fulfilled their duties, setting an example of great sacrifice and devotion, a 'Kalyugi' brother allegedly killed his own brother in a property dispute in Gobindganj police station area in Bihar's East Champaran district.

The body of Abhunandan Pandey was found lying on a state highway near Radhiya village under Gobindganj police station on 31 December last, which was recovered by police on local's calls. The deceased - a native of Laukhan Pakadiya under Pahadpur police station area was posted in BRC Pahadpur in education department. He was eliminated by a

contract killer at the time he was returning from his duties. Two unidentified gunners riding on a bike shot him very close blank range and killed him on spot, police said. Killing was meticulously planned so that apart from family members, local police took it as a case of road accident initially.

"They sent the body to Motihari Sadar hospital with enquires of a road accident to undertake an autopsy, but the doctor, while undertaking the autopsy, found a bullet mark on the deceased's body and observed profuse bleeding led to his death. The mysteries behind this fratricide came to light when a special investigation team (SIT) constituted by superintendent of police (SP) Swarn Prabhat, delved deep

into the case and picked up two suspects. The interrogation revealed that Abhunandan's own brother Lokesh Pandey hired a contract killer paying Rs 1 lakhs and eliminated him to control properties in deceased shares.

A press communiques issued by district police headquarter reads that Lokesh Pandey - the fratricide admitted that his contract killer eliminated Abhunandan aka Kuber at his behest. Sub-divisional police officer, Areraj Ranjan Kumar, who led the SIT told that his police team is running after shooter to arrest him and commanded the proper coordinations of SHO Gobindganj Raju Kumar, SHO Pahadpur Jitendra Kumar and their team for cracking the case before time.

**The Abhunandan murder case has been solved, and it's a shocking tale of fratricide. Abhunandan Pandey, a native of Laukhan Pakadiya in Bihar's East Champaran district, was found dead on a state highway near Radhiya village on December 31. Initially, the police thought it was a road accident, but an autopsy revealed a bullet mark and profuse bleeding as the cause of death. A special investigation team (SIT) led by Superintendent of Police Swarn Prabhat dug deeper and picked up two suspects. The interrogation revealed that Abhunandan's own brother, Lokesh Pandey, had hired a contract killer for Rs 1 lakh to eliminate him and gain control over their shared properties. Lokesh has confessed to the crime, and the police are now on the hunt for the shooter. It's a disturbing case of sibling rivalry turned deadly, and the police are recommended for cracking it quickly.**

Shubman Gill among 4 Gujarat Titans players likely to be summoned by CID



reach Mohit Sharma for comment have been unsuccessful.

According to Deputy Inspector General of Police (CID-Crime) Parikshita Rathod, Zala used his company, BZ Financial Services, to collect money from investors by promising them high returns. Zala was on the run for nearly a month before being arrested in Mehsana district on December 27. He is currently in custody until January 4. Rathod further revealed that Zala used the funds to acquire assets worth Rs 100 crore, both movable and immovable, but failed to repay the investors as promised. Seven others have also been arrested in connection with the case. The CID claims Zala had promised investors an annual return of 36 percent. Gujarat CID officials have stated that the players' cooperation will be crucial in the ongoing investigation, and further developments are expected as the case progresses.

## FBI Probes ISIS Angle In New Orleans Attack

**Agency:** A pick-up truck into a crowd of New Year revellers, killing at least 15 people and injuring dozens. New Delhi: A US Army veteran ploughed a pick-up truck into a crowd of New Year revellers on Wednesday, killing at least 15 people and injuring dozens. The Federal Bureau of Investigation (FBI) said the accused was killed in an exchange of gunfire. Police Superintendent Anne Kirkpatrick said the man, "hell-bent on carnage," was trying to run over as many people as he could in the city's famous French Quarter, an area that was packed with people celebrating the start of 2025. The FBI is investigating the incident as an act of terrorism. The attacker as Shamsud-Din Jabbar, a 42-year-old "US citizen from Texas". Officials said he might not have been acting alone. "An ISIS flag was located in the vehicle, and the FBI is working to determine the subject's potential associations and affiliations with terrorist organizations," the FBI said in a statement. He served more than 10 years in the military as a human resource specialist and an IT specialist, according to the Pentagon, which said Jabbar deployed to Afghanistan from 2009 to 2010. In a video posted on YouTube four years ago, Jabbar speaking with a southern US accent boasted of his skills as a "fierce negotiator" as he advertised his property management services to potential clients. Criminal records reported by the New York Times show that Jabbar had two previous charges for minor offenses -- one in 2002 for theft and another in 2005 for driving with an invalid license. Jabbar was twice-married, according to the newspaper, with his second marriage ending in divorce in 2022, when he detailed experiencing financial problems in an email to his wife's lawyer. "I cannot afford the house payment," he reportedly wrote, adding that his real estate company had lost more than \$28,000 in the previous year, and that he had taken on thousands in credit card debt to pay for lawyers. President Joe Biden said, "There is no justification for violence of any kind, and we will not tolerate any attack on any of our nation's communities." President-elect Donald Trump linked the attack to illegal immigration. "When I said that the criminals coming in are far worse than the criminals we have in the country... it turned out to be true," Trump posted on social media.